Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

Original Article

जनसंख्या वृद्धि और विकास: शेखपुरा जिला का एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ स्मिता कुमारी
भूगोल विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया
Email-

Manuscript ID:
JRD -2025-170904
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 9(A)
Pp.21-25
September 2025
Submitted: 23 Aug. 2025
Revised: 3 Sept. 2025
Accepted: 21 Sept. 2025
Published: 30 Sept. 2025

सारांश

भूमि उपयोग पर कोई भी अध्ययन मनुष्य के विश्लेषण के बिना अधूरा है, क्योंकि मनुष्य भूमि उपयोग में बदलाव लाकर अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए हमेशा सक्रिय रहता है। भूमि और मनुष्य के बीच संघर्ष, मनुष्य द्वारा भूमि पर की गई उपलब्धियों के विभिन्न चरणों में देखा जा सकता है। जनसंख्या भूगोल के अध्ययन का तरीका चाहे कुछ भी हो, भूमि उपयोग से उसका घनिष्ठ संबंध उसके विश्लेषण के किसी भी चरण में नकारा नहीं जा सकता। हालांकि मैल्थसियन और मार्क्सियन सिद्धांत दोनों मुख्य रूप से सामाजिक और मानव विकास के निश्चित रुझानों से संबंधित हैं, लेकिन उनका भूमि उपयोग की समस्या से सीधा संबंध है। जहाँ पहला सिद्धांत मनुष्य और भूमि के संबंध पर ज़ोर देता है, वहीं मार्क्सियन सिद्धांत कहता है कि मनुष्य और भूमि के बीच संबंध यह तय करता है कि भूमि का उपयोग कैसे होगा, न कि इसके विपरीत। इन दोनों दृष्टिकोणों से अलग, 'प्रायोगिक दृष्टिकोण' समस्या के निर्माण और उसके समाधान पर ज़ोर देता है, जो जांच के कार्यक्षमता सिद्धांत के रूप में होता है। मानव संसाधन, भूमि संसाधन जितना ही महत्वपूर्ण है। मनुष्य भूमि पर दबाव डालने वाला सक्रिय तत्व है और वह विशाल और विविध भूमि संसाधनों से कई तरह के लाभ उठाता है। यह शोधपत्र शेखपुरा जिले में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियों और उसके विकास पर प्रभाव का विश्लेषण करता है। पिछले दशकों में जिले की जनसंख्या में तीव्र हुई है, जिसने कृषि, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थय और संसाधन उपयोग पर दबाव डाला है। भौगोलिक दृष्टिकोण से जनसंख्या वृद्धि और विकास के बिच गहरा संबंध है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उच्च जन्मदर, निम्न दर और प्रवास जनसंख्या वृद्धि के मुख्य कारण हैं। सतत विकास के लिए शिक्षा, परिवार नियोजन और वैकल्पिक रोजगार के अवसरों का विस्तार आवश्यक है।

मूल शब्द : *जनसंख्या वृद्धि, विकास, प्रवास, कृषि, मानव संसाधन*

अध्ययन क्षेत्र :

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में, जहाँ जनसंख्या बढ़ रही है, अतिरिक्त महीनों के लिए संसाधनों की आवश्यकता होती है। बिहार राज्य भी इससे अलग नहीं है, लेकिन बिहार की उपजाऊ ज़मीन पर लाखों लोगों को बसाया जा सकता है। यह पता लगाने के लिए ज़मीन का अध्ययन करना होगा कि क्या ज़मीन आज के मुकाबले और अधिक अनाज पैदा कर सकती है। भारतीय अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय बदलाव आया है, जिससे विविधता और परिवर्तन हुआ है। भारतीय अर्थव्यवस्था अभी भी कृषि पर ही निर्भर है, क्योंकि सांस्कृतिक ढाँचा देश की कुल आय का आधा हिस्सा कृषि और उससे जुड़ी गतिविधियों से आता है, जो देश के तीन-चौथाई कामकाजी लोगों को भोजन उपलब्ध कराती है। देश अभी भी कृषि पर निर्भर है और जनसंख्या बढ़ने के साथ, भारत को कृषि को अन्य किसी भी गतिविधि से अधिक विकसित करना होगा। अपने विशाल भूमि, जल और मानव संसाधनों के साथ, भारत एक कुशल देश बन सकता है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ स्मिता कुमारी, भूगोल विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

How to cite this article:
कुमारी, . स्मिता . (2025). जनसंख्या वृद्धि और विकास: शेखपुरा जिला का एक भौगोलिक अध्ययन. Journal of Research and Development, 17(9(A)), 21–25. https://doi.org/10.5281/zenodo.17492120

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17492120
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

इस कार्य के लिए भारी संसाधनों की आवश्यकता होती है, तकनीकी कौशल और पारिस्थितिकी तंत्र का सावधानीपूर्वक प्रबंधन। भूमि का अध्ययन भौतिक संसाधनों का अध्ययन है। जनसंख्या, अपनी मानव शक्ति की गुणवत्ता और मात्रा के माध्यम से संसाधनों का उपयोग करती है। सांख्यिकी संसाधनों के उपयोग का एक विशिष्ट पैटर्न है। इस संदर्भ में शेखपुरा जिले की जनसंख्या का अध्ययन प्रासंगिक हो जाता है। यह जिला गंगा के दक्षिणी मैदान के कृषि-समृद्ध और घनी आबादी वाले क्षेत्र में स्थित है। जहाँ जनसंख्या का स्थानिक वितरण और घनत्व मिट्टी की क्षमता और उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों से निकटता से संबंधित है।

अध्ययन का क्षेत्र का मानचित्रण

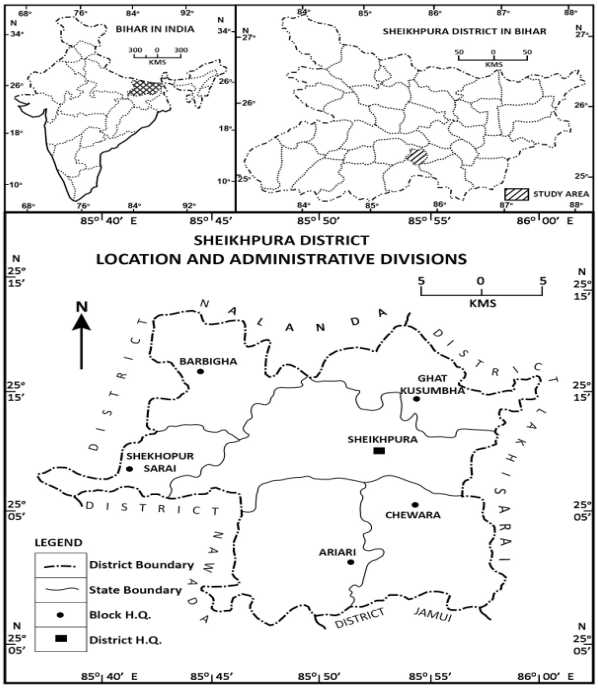

Fig. - 1.1

जनसंख्या कारक के कई पहलू हैं जो आर्थिक विकास की प्रक्रिया को अपने तरीके से प्रभावित करते हैं। जनसंख्या के कुछ पहलू हैं जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या वितरण, जनसंख्या घनत्व, मानव-भूमि अनुपात, लिंगानुपात, आयु और लिंग संरचना, साक्षरता, व्यावसायिक संरचना और ग्रामीण-शहरी संरचना।

उद्देश्य:

- शेखपुरा जिले की जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियों का विश्लेषण।
- जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारणों की पहचान।
- जनसंख्या वृद्धि और विकास के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन।
- भविष्य की संभावनाओं और चुनौतियों का आकलन।

जनसंख्या वृद्धि :

जनसंख्या भूगोल में, "जनसंख्या वृद्धि" शब्द का उपयोग एक निश्चित अवधि में किसी क्षेत्र में रहने वाली जनसंख्या की संख्या में बदलाव को दर्शाने के लिए किया जाता है, चाहे वह बदलाव सकारात्मक हो या नकारात्मक। किसी क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि, उसके आर्थिक विकास, सामाजिक जागृति, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, ऐतिहासिक घटनाओं और राजनीतिक विचारधारा का एक सूचक है। किसी क्षेत्र में जनसंख्या की उल्लेखनीय वृद्धि, इसलिए विभिन्न जनसांख्यिकीय घटनाओं के बीच अंतर्निहित संबंध को समझने के लिए मौलिक है। जनसंख्या वृद्धि वृद्धि और कमी के कारकों के बीच एक गतिशील संतुलन है और यह प्राकृतिक प्रतिस्थापन का योग है, जो अध्ययन की अवधि के दौरान किसी क्षेत्र में हुआ है। जनसंख्या वृद्धि भूमि पर उसके दबाव को दर्शाती है और यह चार प्रमुख घटकों - प्रजनन क्षमता, मृत्यु दर, आव्रजन और प्रवासन - का परिणाम है। शेखपुरा जिले में जनसंख्या वृद्धि पर चर्चा करने से पहले, दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जनसंख्या विस्फोट और वृद्धि के रुझान के निहितार्थों का अध्ययन करना आवश्यक है। आज जनसंख्या विस्फोट मानवता के लिए एक बड़ा खतरा है। विकासशील देशों में अत्यधिक खपत से पहले ही प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हो रहा है, तीसरी दुनिया में जीवन स्तर में वृद्धि से इन संसाधनों पर और दबाव पड़ेगा। जबकि कई विकसित देश अपनी जनसंख्या वृद्धि दर को स्थिर करने में सक्षम हुए हैं, विकासशील देशों की स्थिति चिंताजनक है। इन देशों में तेजी से बढ़ती जनसंख्या आर्थिक विकास कार्यक्रमों से मिलने वाले सभी लाभों को खत्म कर

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

देती है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, पृथ्वी पर पांच अरबवाँ बच्चा 11 जुलाई 1981 को पैदा हुआ था। इसे विश्व जनसंख्या विस्फोट का प्रतीक माना गया है। वास्तव में,पहला अरबवाँ बच्चा पिछली सदी की शुरुआत तक नहीं आया, जब मानव पृथ्वी पर लगभग 30 लाख साल पहले दिखाई दिया था। दूसरा अरबवाँ बच्चा 1920 के दशक में, तीसरा 1958 में और चौथा 1975 में आया। अगले 12 वर्षों में यह वृद्धि चौंकाने वाली है। एक और अरबवाँ बच्चा होगा, और अगले 23 वर्षों में एक और अरबवाँ बच्चा होगा। 2020 तक विश्व की जनसंख्या 8 अरब हो जाएगी।3 तीसरी दुनिया में स्थिति और भी चिंताजनक है क्योंकि यहाँ मानवता का तीन-चौथाई हिस्सा रहता है और भविष्य की 90% वृद्धि यहीं होने वाली है। सबसे तेज़ वृद्धि दर गरीब विकासशील देशों में है, खासकर अफ्रीका में, जो जल्द ही दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला महाद्वीप बन जाएगा। भारत की स्थिति भी निराशाजनक है। दुनिया के 2.4% क्षेत्रफल में 15% आबादी रहती है। 1971-81 के बीच भारत की आबादी में 138 मिलियन की वृद्धि हुई, जो लगभग जापान की वर्तमान आबादी के बराबर है। जापान दुनिया का सातवां सबसे अधिक आबादी वाला देश है। हर साल भारत में 15 मिलियन से अधिक लोग जुड़ते हैं, यानी हम हर साल दुनिया की आबादी में एक नया श्रीलंका जोड़ते हैं। हालांकि भारत चीन के बाद दूसरे स्थान पर है, लेकिन जनसंख्या वृद्धि दर के मामले में इसने चीन को भी पीछे छोड़ दिया है। जनसांख्यिकीय अनुमान बताते हैं कि अगर जनसंख्या वृद्धि की मौजूदा दर को जल्द ही नियंत्रित नहीं किया गया, तो भारत दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन जाएगा। चीन अपनी आबादी को लगभग 1200 बिलियन पर स्थिर करने की योजना बना रहा है। भारत की आबादी 2020 तक इस स्तर को पार कर जाएगी और दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन जाएगा। भारत में भी जनसंख्या वृद्धि असमान रही है। बिहार में जनसंख्या घनत्व बढ़ा है और 1961-71 के दौरान 21.33% और 1971-81 के दौरान 23.90% की वृद्धि हुई। लेकिन शहरी क्षेत्रों में वृद्धि दर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक थी। इन दशकों में राज्य की शहरी आबादी 43.95% और 54.40% बढ़ी। शेखपुरा जिले के बारे में, प्राचीन और मध्ययुगीन काल में इसकी आबादी के बारे में बहुत कम जानकारी है। विद्वानों ने कुछ अनुमान लगाए हैं, लेकिन ये अनुमान ठोस तथ्यों और आंकड़ों पर आधारित नहीं हैं। जनसंख्या के रुझानों के बारे में हमारी जानकारी मुख्य रूप से भारत की जनगणना से मिलती है। यह संतोष की बात है कि पिछले 110 वर्षों के रिकॉर्ड उपलब्ध हैं, जो जनसंख्या और वृद्धि दर के विश्वसनीय आंकड़े देते हैं। शेखपुरा जिले में जनसंख्या और उसकी वृद्धि दर का विवरण देती है। यह उपरोक्त दर्शाती है कि 1901 से 1911 के बीच जिले की आबादी में वृद्धि हुई। हालांकि, वृद्धि दर हर दशक में अलग-अलग रही, लेकिन 1901-1911 का दशक समृद्ध रहा और प्लेग और बुखार की महामारी के बावजूद जनसंख्या में 3.13% की प्राकृतिक वृद्धि दर्ज की गई। जिले के विभिन्न क्षेत्रों में वृद्धि दर अलग-अलग है।

तालिका - 1.1 शेखपुरा जिला : जनसंख्या वृद्धि, 2011 वर्ष

वर्ष	जनसंख्या	दशक में अन्तर	प्रतिशत दशक में अन्तर
1901	**-**	**-**	**-**
1911	145438	-	-
1921	142493	-2945	-2.02
1931	159986	17493	12.28
1941	190743	30757	19.22
1951	192981	2238	1.17
1961	262774	69794	36.17
1971	176112	13336	5.04
1981	351803	74692	27.06
1991	425607	73805	21.03
2001	525503	100897	23.76
2011	636343	110841	21.09

Source : Census Hand Book of India 1901-2011.

वर्ष 1921 को भारतीय जनसंख्या में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है, क्योंकि 1911-21 के दौरान राज्य के लगभग सभी हिस्सों में जनसंख्या में कमी आई थी। शेखपुरा जिले में भी इस दशक में जनसंख्या में 2.02% की कमी दर्ज की गई। इसका कारण कई

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

बीमारियाँ थीं, जो कई वर्षों तक पूरे राज्य में फैली रहीं। वर्ष 1911 अन्य वर्षों की तरह ही खराब था, जिसमें हैजा, प्लेग और इन्फ्लूएंजा से सामान्य से अधिक मौतें हुईं, लेकिन 1917, 1918 और 1919 को छोड़कर अन्य सभी वर्षों में जन्म दर मृत्यु दर से अधिक थी। इस जिले में प्लेग से होने वाली कुल मौतों का दो-तिहाई हिस्सा इस दशक के पहले छह वर्षों में हुआ। 1911, 1915, 1917 और 1918 में अंतराल पर हैजा संक्रमण फैला। 1914 से 1918 तक इन्फ्लूएंजा से होने वाली मौतों में लगातार वृद्धि हुई। बूढ़ी गंडक और गंगा नदियों में भारी बाढ़ आई और भारी बारिश से खरीफ की फसलें खराब हो गईं। इन सभी कारणों से बड़ी संख्या में सक्षम पुरुष पलायन करने को मजबूर हुए।

जनसंख्या में वृद्धि का दौर 1921 के बाद शुरू हुआ। जब आर्थिक स्थिति स्थिर होने लगी और महामारी कम होने लगी। यह वृद्धि का दौर अभी भी जारी है। लेकिन पिछले दशकों में जनसंख्या वृद्धि दर समान नहीं रही। 1921-31 के बीच औसत वृद्धि दर 12.27% थी। लेकिन उसके बाद यह दर बढ़कर 20.08% की उच्चतम वृद्धि तक पहुँच गई। जनसंख्या में इस सामान्य वृद्धि के दौर का कुछ विस्तृत विश्लेषण करना आवश्यक है। 1931 में शेखपुरा जिले की जनसंख्या 1921 की तुलना में 12.27% बढ़ी। 1921 में जनसंख्या 142493 थी जो 1931 में बढ़कर 159986 हो गई, कुल अंतर 17498 का था। हालांकि इस वृद्धि का कारण प्लेग और हैजा जैसी महामारी का खत्म होना और अच्छी फसल की स्थिति बताई गई। 1930 में हैजा का सबसे गंभीर प्रकोप हुआ, 1927 में चेचक भी गंभीर था। बाढ़ से फसलें खराब हुईं और धान की पैदावार निराशाजनक रही। इस कारण, पिछली जनगणना की तुलना में इस जिले की जनसंख्या में 12.27% की वृद्धि पटना को छोड़कर बिहार के किसी भी अन्य जिले की तुलना में अधिक थी। अगले दशकों में वृद्धि दर सामान्य रही, जहाँ तक लोगों के स्वास्थ्य की बात है, प्लेग की महामारी लगभग खत्म हो गई थी, हालांकि कुछ मामले सामने आए थे। 1961 की जनगणना में जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई। यह वृद्धि स्वतंत्रता के बाद देश में हुए सामान्य विकास का परिणाम थी। वृद्धि का कारण स्वतंत्रता के बाद परिवहन और संचार, व्यापार और उद्योग और सबसे बढ़कर कृषि में सुधार था। जिले में 1951 की तुलना में 36.16% की वृद्धि हुई। इस अवधि में जन स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार हुआ जिससे मृत्यु दर में गिरावट आई। 1971 में शेखपुरा जिले में जनसंख्या वृद्धि दर में काफी तेजी आई। 1971-81 के दौरान वृद्धि दर अब तक की सबसे अधिक थी। जिले की जनसंख्या 27.05% बढ़ी। जनसंख्या में यह तेज़ी से वृद्धि मुख्य रूप से स्वच्छता की स्थिति में सुधार और चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता के कारण हुई है। शेखपुरा जिले की जनसंख्या वृद्धि 1901 से 2011 तक दर्शाई गई है, क्योंकि यह जिला 31 जुलाई 1994 को मुंगेर जिले से अलग होकर बना था। इसलिए जनसंख्या का डेटा 2011 की जनगणना पर आधारित है। जनसंख्या वृद्धि का डेटा 1901 से 2011 तक इसलिए दिखाया गया है क्योंकि शोधकर्ताओं ने 1901 से जनसंख्या वृद्धि का डेटा अलग किया था। उस समय शेखपुरा जिला पुराने मुंगेर के सदर डिवीजन का राजस्व थाना था। इसलिए जनसंख्या वृद्धि का डेटा मुंगेर की जनगणना हैंडबुक 1901 से 2011 से लिया गया है।

जनसंख्या का वितरण:

वितरण शब्द का मतलब है कि पृथ्वी की सतह पर जनसंख्या किस तरह फैली हुई है। इसे जनसंख्या की वास्तविक स्थान-स्थिति के आधार पर मापा जा सकता है। लोग इस तरह फैले हो सकते हैं कि जनसंख्या वितरण का पैटर्न रैखिक, बिखरा हुआ या एक जगह केंद्रित हो। जनसंख्या वितरण का यह पैटर्न है जिससे जनसंख्या की अन्य सभी विशेषताएं गहराई से जुड़ी होती हैं। यह न केवल लोगों की रहने की जगह की पसंद को दर्शाता है, बल्कि यह क्षेत्र में मौजूद भौगोलिक स्थितियों का भी एक रूप है। इसलिए, जनसंख्या वितरण में क्षेत्रीय असमानताओं को भौतिक पर्यावरण, अर्थव्यवस्था के प्रकार, सांस्कृतिक पैटर्न और क्षेत्र के इतिहास के संदर्भ में समझना चाहिए। शेखपुरा जिले का क्षेत्रफल 68900.0 हेक्टेयर है। इस क्षेत्र में भौतिक पर्यावरण, अर्थव्यवस्था का प्रकार और सांस्कृतिक पैटर्न आदि में अंतर है। 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 636342 है। लेकिन यह जनसंख्या जिले में बहुत असमान रूप से बंटी हुई है। जिले के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग भौगोलिक स्थिति के कारण जनसंख्या का वितरण असमान है। घाट कुसुम्भा जिले का चौथा सबसे बड़ा अनुभाग है, जिसका क्षेत्रफल 9259.95 हेक्टेयर है, लेकिन जनसंख्या के मामले में यह छठे स्थान पर है। इस अनुभाग में जनसंख्या कम होने का कारण पूरे अनुभाग में ताल क्षेत्र का होना है। इसी तरह, बरबीघा ब्लॉक क्षेत्रफल में पांचवें और जनसंख्या में तीसरे स्थान पर है। इसका कारण भी इस अनुभाग में ताल क्षेत्र का होना है। शेखपुरा क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों में पहले स्थान पर है। इसी तरह चेवाड़ा क्षेत्रफल में तीसरे और जनसंख्या में चौथे स्थान पर है। इन सभी क्षेत्रों में ताल क्षेत्र, संचार सुविधाओं और सिंचाई सुविधाओं की कमी के कारण जनसंख्या कम है। कुछ ऐसे अनुभाग भी हैं जो क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों में सबसे बड़े हैं। इनमें शेखपुरा और अरारी शामिल हैं। शेखपुरा अनुभाग में सबसे अधिक जनसंख्या है और यह क्षेत्रफल में पहले स्थान पर है। इसी तरह अरारी जनसंख्या में दूसरे और क्षेत्रफल में भी दूसरे स्थान पर है। यह दर्शाता है कि जिले की जनसंख्या बहुत असमान रूप से बंटी हुई है। मैदानी और शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या अधिक है, जबकि पहाड़ी और ताल क्षेत्रों में जनसंख्या कम है।

आयु और लिंग संरचना:

अलग-अलग आयु वर्ग में जनसंख्या का वितरण इस जिले में जनसंख्या वृद्धि दर के आकलन में उपयोगी हो सकता है। शेखपुरा जिले की आयु और लिंग संरचना से पता चलता है कि यहाँ जनसंख्या पर निर्भरता ज़्यादा और भागीदारी दर अपेक्षाकृत कम है। अध्ययन

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

से पता चलता है कि कम आयु वर्ग में जनसंख्या ज़्यादा है, जबकि आयु वर्ग कम होने पर जनसंख्या भी कम हो जाती है। ऊपर दी गई तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि कुल जनसंख्या का लगभग 49.26% 9-19 वर्ष की आयु वर्ग के अंतर्गत आता है। 20-39 वर्ष के बीच की कामकाजी जनसंख्या (लगभग 27.52%) को पूरी जनसंख्या का बोझ वहन करना पड़ता है।

जब हम गैर-कामकाजी जनसंख्या का प्रतिशत देखते हैं, जिसमें 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चे, 50 से 80 वर्ष की आयु वाली 11.23% महिलाएँ और 50 से 80 वर्ष की आयु वाले 15.11% पुरुष शामिल हैं, तो कामकाजी जनसंख्या पर निर्भरता वास्तव में और भी बढ़ जाती है। पिछड़े इलाकों में काम का मुख्य बोझ युवा और पूरी ताकत वाले लोगों पर होता है। बड़ी संख्या में बच्चे, खासकर महिलाएं, बहुत सी ऊर्जा खर्च करती हैं, लेकिन काम को जारी रखने के लिए बच्चों की ज़रूरत होती है। इस जिले के लोगों की उम्र और लिंग संरचना का अध्ययन विभिन्न आयु समूहों पर आर्थिक बोझ के विश्लेषण के लिए पर्याप्त जानकारी देता है।

वृद्धि के कारण :

- उच्च जन्मदर और निम्न मृत्यु दर।
- ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक सामाजिक मान्यताएं
- प्रवास- रोजगार के लिए बाहरी पलायन, परन्तु स्थानीय स्तर पर वृद्धि बनी रहती है।

विकास पर प्रभाव:

- **कृषि पर दबाब:** सीमित भूमि पर अधिक जनसंख्या।
- **रोजगार संकट :** बेरोजगारी एवं पलायन।
- **शिक्षा और स्वास्थ्य :** संस्थानों पर बोझ, गुणवत्तापूर्ण सेवाओं की कमी।
- **संसाधनों की कमी:** भूमि, जल, वन पर अति दबाव।
- **शहरीकरण:** शेखपुरा नगर और कस्बों में भीड़भाड़ और अव्यवस्थित विस्तार

भविष्य की चुनौतियों और संभावनाएं :

- जनसंख्या नियंत्रण एवं परिवार नियोजन की आवश्यकता।
- महिला शिक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ावा।
- कृषि के साथ वैकल्पिक रोजगार को बढाना।
- सतत विकास हेतु प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग।

निष्कर्ष:

शेखपुरा जिले में जनसंख्या वृद्धि एक गंभीर चुनौती है, जिसने सामाजिक – आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। भौगोलिक दृष्टिकोण से स्पष्ट है कि जनसंख्या वृद्धि और विकास में सीधा संबंध है। यदि परिवार नियोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं और रोजगार सृजन पर विशेष ध्यान दिया जाए, तो जिले को संतुलित विकास की दिशा में अग्रसर किया जा सकता है।

References

1. Valentry, O.I. (1975) : The Theory of Population, Mascow, Progress Publishers, P. 10.
2. Venkatraman, R. (1985) : Human Resource Development Yojna, Vol. 23, No. 4, P. 4.
3. Trawartha, G.T. (1953) : “Case for Population Geography”, Annals of the Association of American Geographers, Vol. XIII, No. 2, P. 87.
4. Chandra, R.C. and Sidhu, M.S. (1980) : Introduction to Population Geography Kalyani Publishers, New Delhi, Ludhiana, P. 31.
5. Lean, G. “The Birth of the World’s Five Billionth Baby” Times of India, July 11, 1987.
6. Census of India 2011, Bihar Provisional Population Total, P. 8.
7. Census of India 2011, Bihar Provisional Population Total, P. 34.